"महिला उद्यमिता विकास में स्वयं सहायता समूह का योगदान" –एक विश्लेषण

(अजमेर जिले के विशेष सन्दर्भ में)

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर
को आर्थिक प्रशासन एवं वित्तीय प्रबन्ध के लिए वाणिज्य संकाय में
डॉक्टर ऑफ फिलासॉफी की उपाधि हेतु प्रस्तुत की जाने वाली
लघु शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

वर्ष 2021

प्रियंका छपेरा

शोध पर्यवेक्षक :

डॉ. राजकुमार गोधा

वाणिज्य विभाग

म.द.स. विश्वविद्यालय, अजमेर

शोधार्थी का नाम –

In English - Priyanka Chhapera

In Hindi - प्रियंका छपेरा

TITLE OF THE RESEARCH WORK:

(In English)

"Contribution of Self Help Groups in Development of Women Enterpreneurship" - an analysis

(With special reference to Ajmer District)

In Hindi -

" महिला उद्यमिता विकास में स्वयं सहायता समूह का योगदान" – एक विश्लेषण

(अजमेर जिले के विशेष सन्दर्भ में)

LOCATION:

(a) **Institution / Department where the work is to be done-**
Department of commerce
M.D.S. University, Ajmer

(b) **Geographical area of investigation, if any-**
Ajmer District

सूची

1. शोध का क्षेत्र
2. प्रस्तुत शोध सामान्य परिचय
3. प्रस्तावित जांच का महत्व
4. अध्ययन के उद्देश
5. साहित्य का पुर्ननिरीक्षण
6. शोध–अन्तराल 2011–15
7. शोध परिकल्पना
8. शोध प्रविधि
9. अध्याय योजना एवं उनका वर्गीकरण
10. शोध की सीमाएं
11. निष्कर्ष
12. परिशिष्ट
    1. प्रश्नावली का प्रारूप
    2. सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. शोध का क्षेत्र

अजमेर जिले की भौगोलिक स्थिति–

बंजर पहाडियों से घिरी हरी मरूभूमि में स्थित अजमेर एक दिलचस्प अतीत का साक्षी है। सातवीं शताब्दी में राजा अजयपाल चौहान ने इस शहर को निर्मित किया था और ईस्वी सन् 1193 तक यह चौहान शासकों का मुख्य केन्द्र बना रहा।

अजमेर जिला राजस्थान के मध्य में उत्तरी आक्षांश 25.38 से 26.58 तथा पूर्वी देशान्तर 73.54 से 75.22 में मध्य स्थित है।

जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 8481 वर्ग कि.मी. है, इसकी समुद्र तल की उँचाई 870 मीटर है। जिले का अधिकतम तापमान 45.6 तथा न्यूनतम 6.1 सेन्टीग्रेड रिकार्ड हुआ है। जिले में औसत वार्षिक वर्षा 65.95 सेन्टीमीटर है।

अजमेर अरावली पर्वतों की उपत्यका में स्थित है, यहां नाग पहाड प्रसिद्ध है जिससे लूणी नदी का उद्गम हुआ है। जिले की पाँच प्रमुख नदियाँ बानस, खारी, रूपमती, सागरमती, सरस्वती है। जिले के प्रमुख प्राकृतिक झीलें पुष्कर, आनासागर, फायसागर, फूलसागर, नारायण सागर आदि है।

अजमेर जिले में 611.71 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में वन पाये जाते है, जो जिले के भौगोलिक क्षेत्र का केवल 7.21 प्रतिशत है। यहां धोंक,धावडा, सालर, गुरजन आदि के वृक्ष मिलते है।

जिला के पश्चिमी भाग में भूरी रेतीली मिट्टी तथा पूर्वी भाग में कांप मिट्टी मिलती है। अजमेर खनिज पदार्थों की दृष्टि से समृद्ध जिला है। यहाँ बहुतायत मात्रा में अभ्रक, सोप स्टोन, चूने के पत्थर है।

तालिका –1

क्षेत्रफल एंव जनसंख्या

वर्ष	क्षेत्र	क्षेत्रफल (वर्ग कि. मी.)	जनसंख्या		योग	घनत्व प्रति व कि.मी.	लिंगानुपात महिलायें प्रति पुरूष हजार
			पुरूष	स्त्री			
2011	ग्रमीण	8156.30	789397	758245	1547642	189	960
	नगरीय	324.70	534688	500722	1035410	3189	936
	योग	8481.20	1324085	1258967	2583052	305	950

स्त्रोत्रः सांख्यिकी रूपरेखा 2015, कार्यालय उपनिदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग कलेक्ट्रेट, अजमेर।

तालिका विश्लेषणः उपर्युक्त तालिका अजमेर जिले के क्षेत्रफल तथा जनसंख्या को स्पष्ट करती है। साथ ही यह भी स्पष्ट होता है कि अजमेर विशेष में कुल जनसंख्या में स्त्री का प्रतिशत तथा लिंगानुपात (महिलाएँ प्रति हजार पुरूष) की स्थिति को स्पष्ट करती है।

2. प्रस्तुत शोधः सामान्य परिचय

महिला उद्यमिता हमारे देश में एक नये अध्याय के रूप मे उद्घत हुआ है, जिसमें कि महिलाओं को उद्यमिता के क्षेत्र में प्रवेश करने से लेकर अपना अस्तित्व बनाये रखने तक समाज में संघर्ष करना पड रहा है।

महिला उद्यमियों के विकास के लिए वर्तमान युग में विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए कई प्रयत्न किये जा रहे है। इस प्रकार महिलायें उद्यमिता क्षेत्र मे आर्थिक गतिविधियों की ओर पदार्पण कर रही है, जो कि देश की समृद्धि का सूचक है।

वर्तमान में उद्योग विभाग द्वारा अजमेर नगर मे उद्यमिता के सन्दर्भ में किये गये सर्वेक्षण से ज्ञात आँकडें दर्शाते है कि गत 10 वर्षो में महिलाएँ उद्यमिता क्षेत्र की ओर अग्रसर हुई है तथा कुल स्थापित औधोगिक इकाइयों में महिलाओं द्वारा स्थापित इकाइयों की संख्या बढ़ी है।

यह शोध भारतीय महिलाओं की योग्यता, विलक्षणता के अन्तर्गत विश्लेषित है और औद्योगिक भवन एवं प्रबन्धकीय समस्त क्रियाओं, उनके अनुभव एवं रोजगार के मार्ग का अध्ययन है।

प्रस्तुत लघु शोध महिलाओं को उद्यमिता के क्षेत्र में अग्रसर करने मे सहायक सिद्ध होगा। इसके परिणामस्वरूप महिलाओं को उचित मार्गदर्शन प्राप्त होगा तथा वे आर्थिक क्षेत्र में पूर्ण दक्षता से अच्छा प्रदर्शन कर सकने में सक्षम होगीं।

उद्यमिता एक परिचय

व्यावसायिक जगत में ही नहीं, अपितु किसी राष्ट्र के सम्पूर्ण आर्थिक विकास की प्रक्रिया में उद्यमी अथवा साहसी के कार्यों का विशेष महत्व होता है। इनके द्वारा ही देश में उपलब्ध प्राकृतिक तथा मानवीय संसाधनो का राष्ट्रहित में प्रयोग किया जाता है। उद्यमी राष्ट्रीय संसाधनों का उपयोग राष्ट्र के हित में करने का साहस करते हैं तथा व्यावसाय में आने वाली विभिन्न जोखिमों को वहन करते हैं।

उद्यमिता का विकास लगभग विगत दो सौ वर्षों से होता आ रहा है। अर्नस्ट तथा यंग (Ernst and Young) नामक संस्थान ने एक सर्वेक्षण में यह पाया कि ''78 प्रतिशत प्रभावशाली अमरीकियों का यह विश्वास है कि उद्यमिता ही इस शताब्दी का रूख निर्धारित करेगी।''

विश्व में उद्यमिता के विकास का सूचकांक यही दर्शाता है कि वर्ष 2002 का "Totel Entrepreneurial Activitity or TEA" सूचकांक यह स्पष्ट

करता है कि दुनिया में भारत का उद्यमिता विकास में दूसरा स्थान है। प्रथम स्थान थाईलैण्ड का है जंहा उद्यमिता विकास सूचकांक 18.9 प्रतिशत है, जबकि भारत का यह सूचकांक 17.9 प्रतिशत है। अमेरिका का स्थान ग्यारहवाँ है, जहाँ का सूचकांक 10.5 प्रतिशत है।

महामहिम राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे कलाम ने शायद उद्यमिता में निहित जोखिम एवं उद्यमिता के महत्व को समझते हुए ही यह सुझाया था कि – 'उद्यमिता के प्रति अभिरूचि प्रारम्भ से एवं विश्वविद्यालयी वातावरण में ही उत्पन्न करनी चहिये। हमें अपने विद्यार्थियों के व्यापक हितों के लिए अपने पारम्परिक मूल्यों के भीतर अच्छे अवसरों में नपी तुली (Calculated) जोखिम उठाने की शिक्षा देनी चाहियें। उन्हें सही कार्य करने की प्रवृत्ति विकसित करनी चहियें। यही क्षमता उन्हें भविष्य में चुनौतिपूर्ण कार्य करने के योग्य बनायेगी। ' जोखिम और अनिश्चितता के बावजूद हमारे देश में उद्यमिता का विकास निरन्तर हो रहा है। उद्यमिता केवल लघु उद्योग क्षेत्र में ही नही अपितु वृहद् स्तरीय उद्योग क्षेत्र में भी विकसित हो रही है।

अग्रांकित तथ्यों से यह बात भली प्रकार स्पष्ट हो जाती है।

तालिका नं 2

उद्यमिता के विकास सूचक तथ्य

विवरण	2004–2005	2003–2004
1. पंजीकृत लघु इकाइयों की संख्या (लाखों में)	16.38	15.54
2. अपंजीकृत लघु इकाइयों की संख्या (लाखों में)	102.15	98.41
3. सभी लघु इकाइयों में रोजगार (लाखों में)	282.82	271.36
4. सभी लघु इकाइयों द्वारा उत्पादन (चालू मूल्यों पर करोड रूपये में)	399020	357733
5. निजी क्षेत्र की पंजीकृत कम्पनियाँ (लाखों में)	6.40	6.11

स्त्रोतः उद्यमिता के आधारभूत तत्व, डॉ. आर.एल. नौलखा

तालिका विश्लेषण : उपर्युक्त तथ्यात्मक आँकड़े प्रकट करते है कि देश में उद्यमिता का विकास निरन्तर हो रहा है। देश में उद्यमिता का भविष्य काफी उज्ज्वल ही दिखायी दे रहा है।

उद्यमिता : अर्थ एवं परिभाषाएँ

सामान्य अर्थ में कुछ विशिष्ट प्राप्त करने, जोखिम वहन करने एवं अनिश्चितता का सामना करने की क्षमता, साहस अथवा उद्यम कहलाती है।

परम्परागत अर्थ में, उद्यमिता का अर्थ व्यवसाय से जुड़ी हुई अनके प्रकार की जोखिम को उठाने एवं अनिश्चितताओं का सामना करने की योग्यता एवम् प्रवृत्ति से है।

उद्यमिता शब्द की परिभाषा समय के साथ परिवर्तित होती रहती है। इसके अतिरिक्त, विभिन्न विद्वानों ने उद्यमिता शब्द को अलग – अलग दृष्टिकोण से परिभाषित किया है।

निष्कर्ष रूप में – उद्यमिता वह प्रकिया है जिसके अन्तर्गत कोई व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह जोखिमपूर्ण दशाओं में अवसरों की खोजकर सृजनात्मक नवाचार करता है, तथा नये संगठन की स्थापना एवं संचालन करने , किसी नवीन उत्पाद या सेवा को प्रस्तुत करने की जोखिम उठाता है।

उद्यमिता की विशेषताएँ / प्रकृति

उद्यमिता की प्रमुख विशेषताएँ निम्नानुसार है जिनके अध्ययन से इसकी प्रकृति को भली प्रकार समझा जा सकता है :–

1. सृजनात्मक प्रकिया
2. सतत् प्रकिया
3. अवसर खोजने की प्रक्रिया
4. नवाचार
5. जोखिम

6. वातावरण प्रधान प्रक्रिया
7. परिवर्तनों की प्रवृत्ति
8. समर्पण
9. एक व्यवहार

महिला उद्यमी : एक परिचय

उद्यमिता की अवधारणा लिंग के आधार पर पुरूष और महिला में किसी प्रकार से भेदभाव नही करती है तथा महिला उद्यमी भी उद्यमशील क्रियाओं के द्वारा अपनी आर्थिक स्थिति को सुधार सकती है। सृष्टि के प्रारम्भिक काल से ही महिलायें मानव पूँजी के निर्माण में प्रमुख योगदानकर्त्ता रही है। अर्थव्यवस्था तथा सामाजिक स्तर में आये परिवर्तन एवं विकास की प्रक्रिया के साथ उसने उद्यम की स्थापना के कार्य में योगदान देना प्रारम्भ किया।

वास्तव में उद्यमिता के रूप में महिलाओं के लिए पेशे के रूप में एक नया क्षेत्र विकसित हुआ है, जिनमें वे स्वतन्त्रता एवं निजी समर्थन के साथ अपने लक्ष्यों को बेहतर रूप में प्राप्त कर सकती है।

महिला उद्यमी का अर्थ एवं परिभाषा :

सामान्य अर्थ में महिला उद्यमी वह व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह है जो कि एक नवीन व्यावसायिक उपक्रम की स्थापना करता है, व्यवसाय के जोखिमों का सामना करता है तथा उचित निर्णय लेकर उद्यम के लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करता है।

परिभाषा : भारत सरकार के मतानुसार" एक उद्यमी महिला की परिभाषा जो कि स्वंय मालिक हो तथा महिला द्वारा ही नियन्त्रित तथा उस उद्योग में कम से कम 51 प्रतिशत पूँजी पर उसका वित्तीय अधिकार हो तथा उस उद्योग में कम से कम 51 प्रतिशत महिलाओं को रोजगार मिले।''

महिला उद्यमियों के कार्य एवं भूमिका :

उद्यमी के कार्य समय, परिस्थितियाँ, आर्थिक विकास की स्थिति, साधन की उपलब्धता एवं व्यवसाय के आधार पर भिन्न– भिन्न हो सकते है।

पुरूष उद्यमी के समान ही एक महिला उद्यमी द्वारा किये जाने वाले कार्य निम्नलिखित है :–

1. नया उद्यम शुरू करने की खोज व छानबीन करना ।
2. आर्थिक अनिश्चितताओं तथा व्यावसायिक जोखिम को वहन करना।
3. अविष्कारों की शुरूआत करना।
4. व्यवसाय का प्रबन्ध, समन्वय, नियन्त्रण तथा प्रशासन सम्बधी कार्य करना।
5. व्यवसाय सम्बधी निर्णय लेना एवं नियमित देखभाल करना आदि।

ये सभी कार्य हमेशा समान महत्व के नहीं होते है, उद्यमी महिलाओं में प्रायः वही महिला इन सभी कार्यो को करती है जो वास्तव में उद्यम की स्वामी है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महिला उद्यमिता की आवश्यकता :

आधुनिक परिवर्तनशील युग में महिलायें पुरानी धारणाओं को त्याग कर व असत्य सिद्ध कर घेरलू एवं व्यावसायिक गतिविधियों में सफलता प्राप्त कर सर्वत्र अपना परचम लहरा रही है।

उद्यमिता के विकास के कारण ही महिला उद्यमियों के विकास को बल मिला है। उद्यमिता को अपनाकर महिलाओं ने उद्योग के क्षेत्र में नयी ऊँचाइयों को छुआ है। छोटे उपक्रम ही नहीं, कई बड़े उपक्रम भी महिलाओं ने स्थापित कर अपनी क्षमताओं का विकास किया है।

एकता कपूर, किरण मजूमदार, लैला लाल किदवई, रितु नन्दा, शहनाज खाँ आदि कई महिलायें है जिन्होंने उद्यमिता के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन्होंने अपना विकास करने के साथ ही देश का नाम भी रोशन किया है।

यदि इसी द्रुत गति से महिला उद्यमियों की संख्या बढती रही तो भारत वर्ष को विकसित व आत्मनिर्भर देश बनने में अधिक समय नहीं लगेगा।

महिला उद्यमी का महत्व :

उद्यमिता किसी व्यक्ति के जीवन में ही नहीं अपितु सम्पर्ण अर्थव्यवस्था के लिए भी महत्वपूर्ण है। देश के आर्थिक विकास में उपक्रमों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एकसफल उद्यमी के समान ही महिला उद्यमी व्यावसायिक अवसरों की खोज करती है, उनका विदोहन करने के लिए नये – नये उद्योग स्थागित करती है उत्पादन की नवीन तकनीक का विकास करती है और नवीन वस्तुओं का उत्पादन करती है। इस प्रकार देश में औद्योगिक क्रियाओं को प्रोत्साहन मिलता है तथा आर्थिक विकास का सन्तुलित चक्र चलता रहता है।

महिलाओं ने '' केवल गृहणी'' की परम्परागत छवि को बदलते हुए एक सफल उद्यमी के रूप में समाज, देश, विदेश में अपनी अलग पहचान बनायी है।

राज्य स्तरीय महिला स्वयं सहायता समूह संस्थान :

राज्य स्तरीय पर महिलाओं के आर्थिक उत्थान, विभिन्न प्रशिक्षणों, अन्तर्विभागीय समन्वयन, गठन एवं लिंकेज की प्रभावी मोनिटरिंग, अनुसंधान, सर्वेक्षण, सेमीनार, कार्यशालाएं आदि के आयोजन करने की दृष्टि से निम्नलिखित उद्दश्यों के साथ 30 मार्च, 2005 को राज्य स्तरीय महिला स्वंय सहायता समूह संस्थान की स्थापना की गई।

1. स्वंय सहायता समूहों को विभिन्न स्तर पर प्रशिक्षण तथा दक्षता निर्माण एवं कौशल उन्नयन।
2. उत्पाद सम्बन्धी डिजाइन, नवीन तकनीकी एवं बाजार संबंधी गतिविधियों/ स्थितियों का अध्ययन कर संबंधित सुविधाएं दिलवाना।

3. समूहों के गठन एवं उनसे संबंधित व्यवसायों के लिए रिसर्च सर्वेक्षण एवं नवाचार करना।
4. समूहों को बैंक लिंकेज की सुविधा प्रदत्त करना।
5. समूहों की गतिविधियों एवं उत्पदों को बाजार उपलब्ध करवाने हेतु प्रकाशन एवं डॉक्यूमेंटेशन।
6. समूहों के उत्पादों की बिक्री के लिए बाजार, कच्चे माल की उपलब्धता, आउटलेट, व्यापार मेले, हाट आदि जगहों पर प्रदर्शनी एवं स्टाल हेतु मार्केटिंग सुविधाएँ प्रदान करना।
7. समूहों को भारत सरकार एवं राज्य सरकार के अधिनस्थ विभिन्न विभागों / संस्थाओं से जोड कर लाभ दिलवाना।

3. प्रस्तावित जाँच का महत्व :

किसी भी राष्ट्र के बहुमुखी विकास के लिए औद्योगिक वातावरण के सृजन एवम् विकास हेतु उद्यमिता का महत्वपूर्ण स्थान है। आज उद्यम जीवन का एक आवश्यक अंग है। वह युग अब समाप्त हो चुका है जबकि व्यवसाय एवं उद्योग को परम्परागत ढांचे के आधार पर संचालित किया जाता था, आज के आधुनिक युग में महिलाओं को चहुँमुखी विकास के लिए प्रेरित किया जाता है। ऐसे में महिलाओं में भी उद्यमिता की भावना का विकास तीव्र गति से हुआ है।

देश में पुरूष वर्ग के समान ही महिलायें भी उद्यमिता क्षेत्र में अग्रसर हो रही है। उद्यमिता महिलाओं के स्वावलम्बी बनने तथा कार्य की स्वतंत्रता को विकसित करने में सहायक है।

1. महिलाओं के सन्दर्भ में उद्यमिता की श्रेष्ठता की जाँच करना।
2. उद्यमिता के क्षेत्र में महिला उद्यमी को किन – किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

3. सरकार द्वारा महिला उद्यमियों की कठिनाइयों को दूर करने एवम् स्वयं सहायता समूह द्वारा उद्यमियों के विकास हेतु किये गये प्रयासों की जानकारी करना।
4. महिला उद्यमिता के क्षेत्र में भविष्य की सम्भावनाओं की परीक्षण एवम् विश्लेषण करना ही इस शोध की आवश्यकता एवम् महत्व है।

आज की नारी यद्यपि स्वत्व एवम् स्वाभिमान की बात करने में संकोच नही करती तथा अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए तत्परता से आगे बढ़ रही है। महिलाओं में आयी इसी जागृति से प्रेरित होकर शोधकर्ता ने अपने अध्ययन के लिये अजमेर में महिला उद्यमिता का चयन किया है।

4. अध्ययन के उद्धेश्य :

प्रस्तावित शोध का मुख्य उद्देश्य आँकड़ों का सारांश निकालना और वर्तमान में महिला उद्यमिता के स्तर को जानना है।

1. महिला उद्यमियों के उद्यमिक प्रक्रिया के अनुभवों की रूपरेखा बनाना, जिसमें संस्था के प्रबन्धन, स्थापना और प्रारम्भ करने का विशेष उल्लेख करना।
2. उपलब्ध संख्यिकीय आँकड़ों और छोटे उद्योग की महिला स्वामी के रूप में विशेष अनुभव और निष्कर्षों का सूक्ष्म विश्लेषण करना।
3. महिला उद्यमियों की कार्यक्षमता के वर्तमान स्तर को ढूँढ़ना और विकास के मुद्दों को पहचानना।
4. महिला उद्यमियों की सफलतापूर्वक विकसित क्रियाशीलता के लिए कार्य योजना बनाना और व्यूह रचना प्रकट करना।
5. महिलाओं को अपना स्वंय का उद्यम शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करने के कारक का अध्ययन करने के लिए।

6. स्वंय सहायता समूह की महिला सदस्यों की वित्तीय प्रगति का अध्ययन करना।
7. स्वयं सहायता समूह में महिलाओं को पेश आ रही समस्याओं को समझना।
8. महिला स्वयं सहायता समूह के क्रियाशील/कामकाजी तरीके का अध्ययन करना।
9. वर्तमान औद्योगिक परिदृश्य से महिला उद्यमियों को अवगत कराना।
10. महिला उद्यमियों को मजबूत बनाने के लिए सरकारी और गैर सरकारी संगठनों की भूमिका का अध्ययन करना।
11. स्वयं सहायता समूह के कारण सामाजिक विकास का अध्ययन करना।

सहित्य का पुनर्निरीक्षण :

सम्बन्धित क्षेत्र के साहित्य का सर्वेक्षण शोधकर्ता को अनुसन्धान के क्षेत्र में परिवर्तन के साथ तालमेल बनाये रखने के लिए समक्ष बनाता है।

साहित्य समीक्षा न केवल प्रकाशन और पत्रिकाओं में विचारों का एकमात्र संग्रह है, लेकिन यह अनुसन्धान की खोज को समझने के लिए एक आधार स्तर है।

साहित्य की समीक्षा करने के लिए निम्नलिखित बिन्दु ध्यान में रखने चाहिए –

1. वैचारिक स्पष्टीकरण
2. क्षेत्र में अनुसन्धान के अन्तर की पहचान
3. उचित कार्यप्रणाली का परिचय, अध्ययन के लिए प्रासंगिक है
4. एक शोध प्रस्ताव का विकास
5. अनुसन्धान विद्धानों द्वारा अच्छी प्रक्रिया, उपकरण और माप तकनीक को अपनाया गया है।

मन में इस पृष्ठभूमि के साथ शोधकर्ता विभिन्न स्त्रोंतों जैसे – अनुसन्धान विद्वानों, अनुसन्धान संस्थानों और गैर – सरकारी संगठन, विभिन्न वित्तीय संस्थानों और सरकारी एजेन्सियों आदि की रिपोर्ट में काम करता है और एक विस्तृत समीक्षा पेश करता है।

साहित्य समीक्षा :

महिला सशक्तिकरण :

1. **Hemlatha H.M.(2004):** शोध के आरम्भ में समझाया गया है कि सशक्तिकरण को बनाये रखने और महिलाओं की क्षमता निर्माण पर ध्यान केन्द्रित करना आवश्यक है और यह एक सत्त प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में महिलाओं का उपयोग, भागीदारी और कल्याण की विभिन्न गतिविधियों के साथ – साथ विकास कार्यक्रमों के नियन्त्रण का फैसला किया गया है। लेखक ने इस प्रक्रिया में महिला सशक्तिकरण के मुद्दों और महिला सशक्तिकरण के बहुआयामी दृष्टिकोण को वर्णित किया है। सरकार द्वारा उठाये गये कदम सतत् विकास के लिए महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक क्षमताओं को बढाने में सहायक होते है।
2. **Kumari Sumitra (2006):** उपरोक्त शोध में कहा गया है कि महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए व्यापक और ज्यादा बहस का मुद्दा है और यह गतिशील, बहु – आयामी प्रकिया है। जो महिलाओं को जीवन के सभी क्षेत्रों में अपनी शक्ति और क्षमता के अनुरूप सक्षम बनाना चाहता है। लेखक ने चर्चा की है कि समाज में बदलाव के लिए पहली प्राथमिकता है कि महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त कर लेती है तो वह स्वाभाविक रूप से स्वंय निर्णय लेने में सक्षम हो जाती है। महिलाओं का सतत् विकास समुदाय को सशक्त बनाने के लिए आवश्यक है। महिलाओं को समानता के मामले में सामाजिक न्याय और स्वतंत्रता ऐसी स्थिरता प्राप्त करने के लिए गतिशील भूमिका है।

3. **Biju M.R (2006):** उपरोक्त शोध में सशक्तिकरण की अवधारणा पर चर्चा की गई है। लेखक ने गंभीर रूप से महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए भारतीय पहल और अन्तर्राष्ट्रीय पहल की जाँच की। लेखक ने संक्षेप में वर्णन किया है कि वर्तमान समय में महिलाएँ स्वयं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो गई है और सामाजिक बुराईयों के खिलाफ देश भर में आन्दोलन की अुगआई कर रही है। लेखक ने यह भी कहा कि सबसे महत्वपूर्ण मील का पत्थर ऐतिहासिक 73 वें और 74 वें संविधान संशोधन के पंचायती राज और नगर निकायों में महिलाओं के लिए एक – तिहाई सीटें आरक्षित है यह महिलाओं की आर्थिक व सामाजिक विकास के लिए कार्य करता है।
4. **Govindarajan, Latha Padhmanabhan** : उपयुक्त शोध में महिला स्वंय सहायता समूह के बीच सम्बन्धों की जाँच, सन्तोष और कार्य समूह की प्रक्रिया आयामों की विशेषताओं की जाँच की गयी। महिलाओं के स्वंय सहायता समूह महिलाओं की आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के उद्दश्यों के साथ तैयार किए जा रहे हैं। महिला स्वंय सहायता समूह सदस्यों को किसी भी सजावटी वस्तुओं, तैयार किये गये भोजन घोल के पैकिंग आदि कार्यो में संलग्न करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। इन स्वंय सहायता समूहों को आठ NGos के माध्यम से चयन करके महिलाओं के कल्याण कार्यक्रमों के साथ संबद्ध किया जाता है। महिलाओं के कल्याण कार्यक्रमों के साथ संबद्ध किया जाता है। महिलाओं के कल्याण के लिये Mahalir Thittam परियोजना के तहत Multistage नमूने का उपयोग कर कोयम्बटूर जिला तमिलनाडू भारत में शोध किया गया ।
5. **Suja, S2 Global Management Review 2012, Vol, 6 Issue.3 :** प्रस्तुत शोध के अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि स्वयं सहायता समूह में महिलाएँ

संसाधनों पर अधिक नियन्त्रण हासिल करने के लिए, साथ ही घर, समुदाय, समाज और राष्ट्र में से निर्णय लेने में सक्षम है।

स्वयं सहायता समूहों ने आड़े – तिरछे क्षेत्रों में महिलाओं के कौशल में सुधार, सविधाओं का अविष्कार, वित्तीय संस्थानों द्वारा सूक्ष्म / छोटे उद्यमों के लिए ऋण उपलब्ध कराने में, साथ ही मित्रव्ययिता पूर्ण, और आर्थिक बेसहारा वर्गों के पर्यवेक्षण पर ध्यान प्रशस्त किया है।

सरकार महिलाओं के आर्थिक विकास और गरीबी उन्नयन के लिए स्वयं सहायता समूह पर ध्यान केन्द्रित कर रही है। जो कि अध्ययन के अनुसार वर्तमान समय की आवश्यकता बन गया है।

6. **Vetriver S.c. "Advance in Management" June 2010** : अध्ययन किया गया है कि भारत में 1990 के दशक के उदारीकरण और वैश्वीकरण के उद्‌भव के बाद से असंगठित क्षेत्र में विभिन्न स्वरोजगार गतिविधियों में लगी हुई महिला श्रमिकों की समस्या बढ़ गई जब अधिकांश महिलाओं ने अपनी अजीविका को खो दिया है। नई अर्थव्यवस्था में सूक्ष्म वित्त गरीबी उन्मूलन के लिए एक शक्तिशाली साधन के रूप में उभर रहा है। भारत में सूक्ष्म वित्त दृश्य स्वयं सहायता समूहों द्वारा deminated है, उनके बैंक Linkers का ''दूर दराज गरीब'' कार्यक्रम जो न केवल गरीब ग्रामीण महिलाओं की वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने में ही नही बल्कि गरीब स्वंय सहायता समूह की क्षमताओं को मजबूत बनाकर सशक्तिकरण करने में सफल रहा है।

7. **Bali Swami Ranjula Wallentin, Fan Yang International Review of Applied Economics July 2012** : प्रस्तुत शोध में स्वयं सहायता समूह की महिला सदस्यों के सशक्तिकरण पर आर्थिक और गैर – आर्थिक कारकों के प्रभाव का मूल्यांकन किया गया । साथ ही शोध में स्पष्ट किया गया कि महिला सशक्तिकरण पर अव्यक्त कारकों के प्रभाव के लिए एक संरचनात्मक समीकरण मॉडल (SEM) और खाते में डेटा के संबंध प्रकार

के लिए लगभग सही अनुमान लगाये गये है। SEM के परिणाम बताते है कि स्वंय सहायता समूह के सदस्यों के लिए आर्थिक कारक महिलाओं को सशक्त बनाने में सबसे अधिक प्रभावी है। अधिक स्वायत्तता और सामाजिक व्यवहार का भी महिलाओं के सशक्तिकरण पर एक महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

8. **K.Geetamma Bulla B[5] Gloden Research Thoughts, July2013 :** प्रस्तुत शोध के अध्ययन बताते है कि सूक्ष्म वित्त के माध्यम से स्वंय सहायता समूहों को गरीबी से निपटने और ग्रामीण विकास के लिए आधुनिक उपकरण के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दी गई है। सूक्ष्म वित्त और स्वंय सहायता समूह गरीबी कम करने के बारे में जागरूकता पैदा कर अन्ततः राष्ट्र के सतत् विकास में प्रभावी रहे है।

6. शोध अन्तराल 2011 –15 (समीक्षा के आधार पर) :

1. पूर्व में किये शोध अध्ययन में यह माना गया है कि जहाँ पुरूष और महिला उद्यमी को अपने प्रतियोगियों से समान व्यवहार मिलता है, वहाँ उत्प्रेरणा में विभिन्नताएं है और इसलिए उनकी परम्परा और प्रतियोगिता में भिन्नता है।
2. महिलाओं द्वारा चलाये गये स्वयं सहायता समूहों का स्पष्ट उल्लेख नहीं किया गया है।
3. पूर्व के शोध में महिला उद्यमिता को पुस्तिकों में कम दृष्टिपात किया है।
4. अर्थव्यवस्था के सफलतापूर्वक संचालन में महिमा उद्यमियों को इतना महत्व नहीं दिया गया है।
5. भारत में वर्तमान महिला उद्यमियों के प्रदर्शन को सुधारने एवम् इसके अध्ययन करने हेतु बहुत कम प्रयत्न किये गये है।
6. पूर्व के अध्ययन में केवल पुरूषों द्वारा चलाये गये उद्योग और प्रबंध का ही गहन अध्ययन किया गया है जबकि महिला उद्यमिता के दृष्टिकोण को किसी ने भी कलमबद्ध नहीं किया है।

प्रस्तावित लघु शोध प्रबन्ध, भारतीय महिलाओं की प्रतिभा, विलक्षणता, रूपरेखा के अन्तर्गत विश्लेषण है और उद्योग भवन एवम् प्रबन्ध की समस्त क्रियायें उनके अनुभव और रोजगार के मार्ग का अध्ययन है। यह अध्ययन महिलाओं के विकास में सहायक होगा और अच्छा प्रदर्शन और मार्गदर्शन देगा।

7. शोध परिकल्पनाएँ :

राजस्थान में आर्थिक एवं सामाजिक स्तर पर महिला उद्यमी के संबंध में कई परिकल्पनाएँ परिलक्षित हैं ओर अब यह आवश्यक हो गया है कि इन परिकल्पनाओं की तार्किक जाँच की जाये। शोध अध्ययन को प्रारंभ करने से पूर्व निम्न परिकल्पनाओं को सुनिश्चित किया गया।

इन परिकल्पनाओं के आधार पर अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति करने का प्रयास किया जायेगा।

1. औद्योगिक विकास में उद्यमिता एक महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व होते हुए भी उद्यमिता प्रशिक्षण का अभाव है।
2. उद्यम लगाने के लिए अत्यधिक पूँजी की आवश्यकता होती है, पर्याप्त मात्रा में पूँजी न होने पर उद्योग असफल हो जाते हैं।
3. लाभ के अच्छे अवसर प्राप्त होने के उपरांत भी महिलाएँ उद्यमिता के प्रति सजग नहीं है।
4. अधिकांश सफल उद्यमी विशेष तकनीकी योग्यता प्राप्त किये हुए होती है।
5. सफल महिला उद्यमी चाहते हुए भी कुशल गृहणी नहीं हो पाती।
6. महिला उद्यमी में अपेक्षाकृत कम तकनीकी जानकारी होती है, वे व्यवसाय में पुरूषों के सहयोग के बिना सफल नहीं हो सकती हैं।

7. यदि महिला व्यावसायिक परिवार से हो अथवा उन्हें पूर्व में कोई व्यावसायिक अनुभव हो तो वह आर्थिक सफलता प्राप्त करती है।
8. क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान का भारत में पहला स्थान होने पर भी यहाँ अपेक्षाकृत महिला उद्यमिता जाग्रति का अभाव है।
9. महिलाएँ अपनी अलग पहचान बनाना चाहती है तथ परिवार के आर्थिक उत्तरदयित्वों में सहयोग देना चाहती है।
10. आधुनिक युग में संचार माध्यम के कारण महिलाओं में उद्यमिता के क्षेत्र के प्रति जागृति आयी है।
11. स्वयं के घर पर भी यह व्यवसाय खोले जा सकने के कारण महिलाएँ दोहरे उत्तरदायित्व को निभाने में सफल होती है।

8. शोध प्रविधि :

प्रस्तावित लघु शोध प्रबन्ध का अध्ययन अजमेर जिले में आयोजित किया जा रहा है। शोध अध्ययन के उद्वेश्य के लिए अधिकृत और उपर्युक्त सूचना हेतु समंक एकत्रित करने की प्रक्रिया अपनायी जायेगी। समंक संग्रह तकनीक में प्राथमिक और द्वितीयक समंकों दोनों प्रकार के समंकों का ही प्रयोग किया जायेगा।

1. प्राथमिक संमक
2. द्वितीयक संमक

1. **प्राथमिक समंक स्त्रोत** – प्राथमिक समंक संकलन के तहत निम्न मापदण्ड निर्धारित किये जायेंगे।

1. प्राथमिक समंकों को एकत्रित करने के लिए उपयोगी सामग्री एवम् आँकड़े सर्वेक्षण के द्वारा अजमेर उद्योग कार्यालय ''जिला उद्योग केन्द्र'' तथा ''महिला एवम् बाल विकास'' में जाकर एकत्रित की जायेगी।
2. शोध कार्य हेतु औपचारिक – अनौपचारिक साक्षात्कार द्वारा सम्बधित समस्याओं का पता लगाया जाएगा तथा प्राथमिक समंकों का संकलन किया जायेगा।

3. अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में संचालित महिला स्वंय सहायता समूहों से विभिन्न आँकड़े एकत्रित किये जायेगें।
4. प्राथमिक संमकों के एकत्रित करने हेतु आवश्यक प्रश्नावली का प्रयोग किया जायेगा।

2. द्वितीयक समंक स्त्रोत :

1. लघु शोध प्रबन्ध हेतु द्वितीयक आँकड़े मुद्रित और प्रकाशित सरकारी सूचना, जनगणना सूचना, आर्थिक और संख्यिकीय सूचना आदि से एकत्रित किये जायेगें।
2. शोध कार्य हेतु द्वितीयक आँकड़े विभिन्न पुस्तकालयों, पुस्तक समीक्षा, स्वयं सहायता समूहों के वार्षिक रिकार्ड , बैंकों के वार्षिक प्रतिवेदन और अन्य विभिन्न साप्ताहिक, मासिक, वार्षिक पत्र – पत्रिकाओं के लेख, समाचार – पत्रों तथा इन्टरनेट के माध्यम से एकत्रित किये जायेगें।

9. अध्याय योजना एवं उनका वर्गीकरण :

प्रस्तुत शोध में अध्ययन को बोधगम्य बनाने एवं व्यवस्थित क्रमबद्धता को बनाये रखने के लिए इसे अध्यायों में विभाजित किया गया है।

1. प्रथम अध्याय : ' महिला उद्यमिता : एक परिचय'
2. द्वितीय अध्याय : शोध प्रविधि
3. तृतीय अध्याय : महिला उद्यमिता विकासार्थ सरकार द्वारा उठाये गये कदम
4. चतुर्थ अध्याय : स्वयं सहायता समूह की भूमिका
5. पंचम अध्याय : महिला विकास में सहायक कारक
6. पष्ठम अध्याय : 'महिला उद्यमी वर्तमान परिदृश्य
7. सप्तम अध्याय : शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

   सन्दर्भ ग्रन्थ

   पत्र – पत्रिकाएँ

प्रस्तावित अनुसंधान के अध्यायवार विवरण

प्रस्तुत शोध में अध्ययन को बोधगम्य बनाने एवं व्यवस्थित क्रमबद्धता को बनाये रखने के लिए इस 7 (सात) अध्यायों में विभाजित किया गया है।

1. प्रथम अध्याय : ' महिला उद्यमिता : एक परिचय' में सर्वप्रथम उद्यमिता का अर्थ, अवधारणा, महिला उद्यमिता का परिचात्मक अध्ययन किया जाएगा साथ ही आर्थिक प्रगति में महिमा उद्यमी की भूमिका पर विहंगम दृष्टि डाली जाएगी।
2. द्वितीय अध्याय : ' शोध प्रविधि' अध्याय के अंतर्गत शोध क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति, शोध परिकल्पना, शोध प्रविधि, विभिन्न तकनीकों द्वारा समंकों का विश्लेषण, शोध क्षेत्र में महिला उद्यमिता की स्थिति पर प्रकाश डाला जायेगा।
3. तृतीय अध्याय :'महिला उद्यमिता विकासार्थ सरकार द्वारा उठाये गये कदम' में सरकार द्वारा महिला उद्यमिता विकास के लिए चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं को स्पष्ट किया जाएगा।
4. चतुर्थ अध्यायः 'स्वयं सहायता समूह की भूमिका' के अन्तर्गत स्वयं सहायता समूह का अर्थ, महत्व, कार्य, महिला उद्यमी के विकास में योगदान का उल्लेख किया जायेगा।
5. पंचम अध्याय :'महिला विकास में सहायक कारक' के अन्तर्गत महिलाओं को उद्यम के क्षेत्र में आर्थिक, व्यावसायिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक वातावरण में प्रोत्साहित करने वाले कारकों को स्पष्ट किया जाएगा।

6- षष्टम अध्याय : 'महिला उद्यमी वर्तमान परिदृश्य : समस्याएँ एवम्' समाधान' में महिला उद्यमियों की सामाजिक, पारिवारिक एवं आर्थिक समस्याओं के साथ उनके समाधानों पर प्रकाश डाला जाएगा।

7- सप्तत अध्याय : ' शोध निष्कर्ष एवम् सुझाव' इस अध्याय में शोध अध्ययन के निष्कर्षों का मूल्यांकन क्रमबद्ध रूप से अभिव्यक्त किया जायेगा और महिला उद्यमिता के लिए सुझावों को भी प्रस्तुत किया जायेगा, जो कि

अजमेर जिले में महिला स्वयं सहायता समूह के विशेष संदर्भ में सकारात्मक मार्गदर्शन प्रदान करेगा।

10. शोध की सीमाएं :

महिला उद्यमिता पर आधारित यह शोध सामाजिक शोध है, क्योंकि यह समाज के उत्थान के लिए समाज में रहते हुए ही किया गया है।

प्रस्तुत शोध की सीमाएँ अग्र प्रकार है :–

1. आर्थिक एवम् समय सीमा को ध्यान में रखते हुए अध्ययन केवल राजस्थान राज्य के अजमेर जिले के सन्दर्भ तक ही सीमित रखा गया है।
2. प्रस्तुत शोध में अध्ययन में पुरूष वर्ग को सम्मिलित न कर केवल महिला वर्ग को ही लिया गया है।
3. प्रस्तुत शोध में अध्ययन को सर्वेक्षण विधि तक सीमित किया गया है।
4. प्रस्तुत शोध स्वयं सहायता समूह के 5 वर्ष (2011 – 2015) की अवधि के लिए है।

11– निष्कर्ष

पिछले कुछ वर्षो में भारतीय समाज में हुए आर्थिक सामाजिक परिवर्तन के परिणमस्वरूप भारतीय महिलाओं में साहसी दृष्टिकोण एवं व्यवहार का व्यापक प्रसार हुआ है। तकनीकी एवं प्रबन्धकीय शिक्षा के कारण रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई है। प्रौद्योगिकीय परिवर्तनों, राजकीय सुविधाओं, समाजवादी दर्शन, ग्रामीण विकास की विचारधारा योजनाबद्ध विकास के लक्ष्य ने महिला उद्यमिता की गतिशीलता को प्रोत्साहित किया है। सगंठनात्मक एवं प्रबंधकीय कौशल के बढ़ते हुए स्तर से महिला साहसियों के विकास की संभावनाऐं खुली है।

अतः जिस प्रकार भारत की सफलता की गाथा उद्यमियों के बिना अधूरी है, उसी प्रकार उद्यमियों की सफलता की गाथा को महिला उद्यमियों के बिना

नहीं लिखा जा सकता है। स्वयं सहायता समुह के माध्यम से विभिन्न योजनाओं के नवाचार से महिलाओं को आर्थिक विकास की प्रक्रिया में भाग लेने के लिए सक्षम बनाता है। महिलाओं ने देश की आर्थिक स्थिति को अपने कौशल एवं योग्यता से बेहतर बनाने के लिए उद्यम के क्षेत्र का चयन किया है।

विगत धारणाओं के टूटते हुए संबंधो तथा आर्थिक अवसरों के प्रति व्यापक होते हुए अवबोध ने हमारे देश में महिला उद्यमिता के विकास की नयी आशायें जगाई है। अतः उत्कृष्ट सेंवाये एंव योजनाएँ प्रदान कर इसे बनाये रखने का प्रयास करना चाहिये।

12– परिशिष्टः

प्रश्नावली का प्रारूपः

स्वयं सहायता समूह द्वारा व्यवसाय प्रारम्भ करने वाली महिलाओं की जानकारी का विवरण पत्र

1. उत्तरदाताओं की प्रोफाईल–

   अपने व्यक्तिगत डेटा के संबंध में निम्नलिखित विवरण प्रस्तुत करें–
   (उचित कोष्ठक पर सही निशान लगायें)

   1. आवेदक का नाम–
   2. आवेदक की आयु
   3. वैवाहिक स्थिति – अविवाहित ☐ विवाहित ☐ तलाकशुदा ☐
   4. पिता / पति का नाम–
   5. पारिवारिक स्थिति – संयुक्त परिवार ☐ एकल परिवार ☐
   6. आश्रितों की संख्या – ☐
   7. शैक्षणिक योग्यता– माध्यमिक ☐ उच्च माध्यमिक ☐ स्नातक ☐
      उच्च स्नातक ☐ व्यावसायिक ☐ तकनीकी ☐
   8. तकनीकी योग्यता– कम्प्युटर ☐ सिलाई ☐ मशीन ☐ अन्य ☐
   9. वर्तमान पता–
      टेलीफोन नं. –
   10. स्थायी पता
       टेलीफोन नं.–

2. स्वयं सहायता समूह की प्रोफाईल–

   1. क्षेत्र
   2. स्थापना वर्ष–

3. स्वयं सहायता समूह का नाम–
4. समूह में वर्तमान स्थिति – एनिमेटर☐ प्रतिनिधि ☐ सदस्य
5. यदि स्वयं सहायता समूह पंजीकृत हो – हाँ ☐ नहीं ☐
6. स्वयं सहायता समूह की प्रकृति– लघु व्यापार☐ विनिर्माण ☐
   व्यापार☐ सेवा/सर्विस ☐
7. स्वयं सहायता समूह उत्पादन की निर्माण विधि है –
   मशीनरी केमाध्यम से☐ लोगो के माध्यम से☐ दोनों☐
8. समूह में सदस्यो की संख्या – 10 से नीचे ☐ 10–15 ☐
9. पूंजी के स्त्रोत्र – स्वयं की पूंजी☐ ऋण पूँजी☐
10. महिला स्वयं सहायता समूह प्रारम्भ करने/ जुड़ने का उदेश्य ....
   ....
   ....
   ..

दिनांक–

स्थान– आवेदक के हस्ताक्षर

सन्दर्भ सूची

1. **आधार पुस्तकें :**

1. 'उद्यमिता के आधारभूत तत्व' डॉ. आर.एल. नौलखा (आर.बी.डी. पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर)
2. 'उद्यमिता के मूल सिद्धान्त' जी.एस. सुधा (रमेश बुक डिपो, जयपुर)
3. 'उद्यमिता के मूल आधार' राजपुरोहित व्यास, रामचन्दानी,शर्मा (अजमेर बुक कम्पनी , जयपुर)
4. 'उद्यमिता के मूलाधार' डॉ. पी.सी जैन, डॉ. एन .एल शर्मा (रमेश बुक डिपो, जयपुर)
5. ' रिसर्च मेथडॉलॉजी' वीरेन्द्र प्रकाश शर्मा (पंचशील प्रकाशन, जयपुर)
6. औद्योगिक उद्यमिता – शर्मा, हरकुट
7. औद्योगिक प्रबन्ध एवं उद्यमिता – शर्मा, हरकुट
8. Entrepreneurship - Nitin Johri
9. Entrepreneurship - Vasant Desai
10. Entrepreneurship Development - S. Anil Kumar, S.C. Poornima, Mini. K. Abraham, K. Jayashree
11. Entrepreneurship Development, Role of Financial Institutions - Laxmisha A.S.
12. Entrepreneurship - In The Third World - Zafar Altaf
13. Entrepreneurship - Reflections and Investigations - N.S. Bisht, R.C. Misra , A.K Srivastava
14. Entrepreneurship Strategies and Resources - Third Edition - Mare J. Dollinger
15. Entrepreneurship - This Social Science Viw - Richard Swedberg
16. Management and Entrepreneurship Development - G.S.Sudha

17. Problem and Prospects of working Women in Urban India - A.D. Mishra

18. Successful Entrepreneurship - kalyani Kulshreshta

19. Women Entrepreneurship in small and medium Enterprises- IBM

2. पत्रिकायें :

1. जिला उद्योग केन्द्र, अजमेर द्वारा प्रकाशित पत्रिकाये :

अ अजमेर जिले में उद्योगों के लिए सहायता

ब. स्मारिका

स. वार्षिक प्रतिवेदन

2. कार्यालय उप – निदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, अजमेर

अ सांख्यिकी रूपरेखा – 2015

3. महिला एवं बाल विकास विभाग, अजमेर द्वारा प्रकाशित पत्रिका

अ. संचालित गतिविधियाँ एवं प्रगति

4. लीड बैंक द्वारा प्रकाशित पात्रिका :

अ. यशोगाथा – स्वयं सहायता समूह

5. कॉमर्स (विकली) मुम्बई

3. समाचार पत्र :

1. राजस्थान पत्रिका, परिवार (साप्ताहिक)
2. दैनिक भास्कर, मधुरिमा (साप्ताहिक)
3. पंजाब केसरी, यूथ (साप्ताहिक)
4. दैनिक नवज्योति (परिवेश) (साप्ताहिक)
5. सरेराह, अजमेर
6. नवभारत टाइम्स
7. द न्यू इंडियन एक्सप्रेस
8. द इकोनोमी टाइम्स

4. पत्रिकाये :

1. प्रतियोगिता दर्पण
2. इण्डिया टूडे
3. राज सरोकार
4. आर्थिक जगत
5. मेरी सहेली (साप्ताहिक)
6. गृहशोभा (साप्ताहिक)

5. इन्टरनेट वेबसाइट्स :

1. www.shodhgangotri.inflibnet.ac.in
2. www.wcd.inrajasthan
3. www.google.com
4. www.kvic.org.in
5. www.meselfhelp.govt.in/SHGs
6. www.pmegp.in
7. www.selfhelpgroup.com
8. www.wikkipedia.com
9. www. womenempowerment.com